

गांव में मस्ती – भाग ११

रघू का घोड़ा – मोती

(Lekhak – Katha Premi)
Kthprm2004@yahoo.com

This is first part of the second episode of a kinky and fetish erotic novel from our hall of fame writer “Katha Premi”. Katha Premi’s raw and uninhibited narration of erotica in this novel is only for the interested and not for the faint hearted.

Readers can send their views/comments about how you felt about this story to the author directly or post in our yahoo group at http://groups.yahoo.com/group/hindi_internet_love_making_stories

"मां और मंजू किधर हैं रघू दादा?" मैंने कपड़े पहनते हुए पूछा. मैं मजे में था. अभी अभी रघू ने घंटे भर मेरी गांड मारी थी और फ़िर मेरा लंड चूसकर मुझे झड़ा दिया था. हमारी चुदाई शुरू होकर साल भर हो गया था. हम चारों स्वर्ग में थे. हां, और किसी को हमारी चुदाई में अब तक शामिल नहीं किया था. किसी की इच्छा नहीं थी. दो नर और दो नारियां होने के कारण हर एक को हर तरह का आनंद मिल रहा था.

"चोद रही होंगी कहीं एक दूसरे को. तू मत चिंता कर, जा अब खेल. मैं मोती को जंगल में घुमा लाता हूँ" रघू ने कपड़े पहनते हुए प्यार से मेरे बाल बिखरा कर कहा.

"मैं भी आऊं तुम्हारे साथ?" मैंने मचल कर पूछा. रघू ने मना कर दिया. बोला कि मैं घर में ही रहूँ क्योंकि मां वापस आकर अपनी बुर चुसवाने को और दूध पिलाने को मुझे ढूंढेगी और अगर नहीं मिला तो बहुत नाराज होगी.

रघू के जाते ही मैं चुपचाप छुपता हुआ रघू के पीछे हो लिया. मोती पर सवार होकर वह बड़े आराम से उसे जंगल में ले जा रहा था. झाड़ियों के पीछे छुपकर उसका पीछा करते हुए मैं सोच रहा था कि आखिर रघू क्या करने जा रहा है जो मुझे आज साथ में आने से मना कर दिया. कल ही तो उसने मोती की सवारी मुझे कराई थी और फ़िर जंगल में ले जाकर मुझसे अपना लंड चुसवाया था. मोती की सवारी करने में तो मुझे बहुत मजा आता था.

मोती था भी बड़ा शानदार. एकदम ऊंचा पूरा सफ़ेद रंग का और बड़े शांत स्वभाव का खूबसूरत जवान अरबी घोड़ा था. रघू उसे रोज मल मल कर नहलाता था और मोती उससे एकदम साफ़ सुथरा रहता था. अभी अभी महने भर पहले ही रघू मां से पैसे लेकर उसे खरीद कर लाया था. साथ में रघू ने दो कुत्ते और एक कुतिया भी खरीदे थे. कुत्ते शेरू और टामी अल्सेशियन नसल के हल्के भूरे रंग के खूबसूरत बड़े बड़े कुत्ते थे. एकदम साफ़ सुथरे और बहुत घरेलू स्वभाव के. आते ही ऐसे मिल जुल गये थे जैसे हमेशा हमारे यहां रहे हों.

कुतिया जिनी सफ़ेद रंग की लेब्रेडार जाति की थी. बड़ी प्यारी थी. वह भी दुम हिलाती हुई सारे समय हम लोगों के आस पास रहती थी और बार बार हमसे चिपटने की कोशिश करती थी. मंजू और मां तो उनसे बड़ा प्यार करते थे. रघू भी उनपर जान छिड़कता था. कारण मुझे बाद में पता चला. सब जानवरों को रघू ने अपने यहां खेत वाले घर पर रखा था. मैंने अपने यहां घर में रखने की जिद की पर मां बोली कि यहां वे परेशान करेंगे, इसलिये वे वहीं मंजू के खेत वाले घर में रहें तो अच्छा है.

मां और मंजू उनसे बड़ा प्यार करते थे. मां उनसे खेलने अक्सर मंजू के यहां चली जाती थी. कहती थी कि उन्हें नहलाने में मंजू की मदद करेगी. मंजू और मां ऐसा कहकर अक्सर बड़ी शैतानी से एक दूसरे को आंख मार कर खिलखिलाने लगती थीं. मुझे कुछ समझ में नहीं आता था. वैसे यह सच था कि उन कुत्तों को रोज नहलाया जाता था क्योंकि वे बड़े चिकने और साफ़ लगते थे.

मैं बहुत जिद करता तो मां मुझे साथ ले जाती और एक घंटे में वापस ले आती. तीनों कुत्ते हमें देखकर ऐसे प्यार से हमपर झपटते कि सम्हालना मुश्किल हो जाता. मां और मंजू पर तो उनकी खास मेहेरबानी थी. वे बार बार उछल कर उन दोनों के मुंह चाटते और उछल उछल कर उनपर चढ़ने की कोशिश करते. आखिर मंजू उन्हें डांटती तब वे शांत होते.

कुत्ते तो मां ने शायद शौक के लिये खरीदने को कहा था रघू से पर घोड़े की हमारे यहां कोई जरूरत नहीं थी. घोड़ागाड़ी हम कब से इस्तेमाल नहीं करते थे. अब भी मोती आने के बाद भी नई घोड़ा गाड़ी अब तक नहीं खरीदी गयी थी. मैंने मां से पूछा तो बोली कि वह जल्द ही एक बघी खरीद लेगी, तब मोती की जरूरत पड़ेगी.

आज सुबह से मां गायब थी. शायद मंजू के यहां ही गयी थी. इसलिये मेरा खयाल रखने को उसने रघू को भेज दिया था. रघू आते ही मुझे बेडरूम में ले गया था और तरह तरह से मुझे प्यार करके मेरा मन बहलाता रहा था. आखिर जब मैंने उसके हलब्बी लंड से गांड मरायी तब मुझे कुछ शांति मिली थी.

अब रघू का पीछा करते करते मेरा फ़िर खड़ा होने लगा था क्योंकि रघू भी अजीब हरकत कर रहा था. अब वह मोती पर से उतरकर उसकी लगाम पकड़कर पैदल चल रहा था. उसका लंड धोती में तंबू बनाता हुआ फ़िर खड़ा हो गया था. वह बार बार मोती की पीठ सहला रहा था और कभी कभी उसे चूम भी लेता था. मोती भी मतवाली चाल चलता हुआ

बार बार अपना सिर घुमा कर रघू की छाती को प्यार से अपनी थुथनी से ढकेलता और हिनहिनाता.

"बस बस आ गया राजा हमारा मुकाम, जर सब्र कर." रघू बड़े दुलार से मोती को बोला. मुझे लगने लगा कि कुछ गड़बड़ जरूर है.

अचानक मेरी नजर मोती के लंड पर पड़ी. वैसे उस घोड़े का लंड मैंने बहुत बार देखा था. सात आठ इंच लंबा भूरा मोटा लंड हमेशा लटका रहता और खास ध्यान देने जैसी कोई बात उसमें मैंने नहीं देखी थी. पर अब उसे देखकर मेरी सांस जोर से चलने लगी. मोती का लंड खड़ा होने लगा था. उस भूरे लंड में से लाल रंग का एक सुपाड़ा और डंडा अब धीरे धीरे बाहर आ रहा था. मोती मस्ती से अब रघू से चिपटने की कोशिश कर रहा था.

"रुक जा मेरी जान, लगता है तू समझ गया कि तेरा ये दीवाना तुझे मुहब्बत करने को यहां लाया है. अभी तुझे खुश करता हूं पर जरा रुक तो, ऐसे मत मचल!" रघू ने हाथ बढ़ाकर मोती के लंड को सहलाते हुए कहा. अब वे दोनों झाड़ों के बीच झाड़ियों से घिरी एक साफ़ सपाट जगह पर पहुंच गये थे. वहां रघू रुक गया. मैं झाड़ी के पीछे बैठकर तमाशा देखने लगा.

मोती अब खड़ा खड़ा हिनहिनाते हुए अपने अगले खुर जमीन पर रगड़ रहा था. उसका लंड अब और बाहर निकल आया था. रघू जाकर उसके पेट के नीचे पलथी मार कर बैठ गया और दोनों हाथों में उसका वह लाल लाल डंडा लेकर उसकी मालिश करने लगा जैसे लाठी में तेल लगा रहा हो. मोती अब उत्तेजना से थरथरा रहा था. रघू ने कहा "हाय मेरे यार. कुर्बान जाऊं तेरे इस लंड पर. क्या लौड़ा है रे तेरा, मेरे लिये तो स्वर्ग का टुकड़ा है." और मुंह लगाकर उस मतवाले लंड के डंडे को चूमने लगा.

मेरा भी खड़ा हो गया था. उस खूबसूरत जानवर का वह महाकाय लंड बहुत ही सुंदर और लजीज दिख रहा था. करीब करीब एक फुट लंबा और अढ़ाई तीन इंच मोटा वह लौड़ा किसी छोटी लौकी जैसा मोटा था. सुपाड़ा लंड के सामने छोटा लग रहा था पर था वह रघू के सुपाड़े से भी काफ़ी बड़ा, करीब करीब एक छोटे सेव या अमरूद जितना होगा. रघू जिस तरह से मोती के लंड को रगड़ता हुआ बार बार चूम रहा था, मैं समझ गया अब जल्द ही वह आगे का काम करेगा. चूमने के साथ रघू जीभ निकालकर घोड़े के पूरे लंड को बीच बीच में चाटने लगता.

रघू भी अब बेहद उत्तेजित था. बार बार न रहकर वह एक हाथ हटाकर अपने लंड को मुठियाने लगता. मुझे लगा कि वह अब मोती की मुठ मार देगा पर उसकी मन में धधकती वासना का असली रूप अब मुझे समझा जब रघू बोला. "मोती राजा, चल अब अपनी माल खिला दे, तेरे लंड के गाढ़े मलाईदार माल का तो मैं दीवाना हूं राजा. पेट भर दे मेरा यार" कहकर उसने अपना मुंह पूरा खोला और हौले से मोती के लंड का सुपाड़ा मुंह में भर लिया. रघू के मुंह के अंदर सुपाड़ा जाते ही मोती एकदम स्थिर हो गया, बस उसका बदन भर कांप रहा था.

वह सेव जैसा सुपाड़ा जिस आसानी से रघू ने मुंह में ले लिया उससे यह पता चलता था कि वह पहली बार ये नहीं कर रहा है. अब आंखें बंद करके रघू मन लगाकर घोड़े का लंड चूस रहा था और अपने दोनों हाथों में मोती का लंड पकड़कर जोर से उसे सड़का लगा रहा था. आगे पीछे करने से मोती का सुपाड़ा फूलता और सिकुड़ता और रघू एक गाल भी उसके साथ फूलते और सिकुड़ते.

अब रघू ने लंड को और निगलना शुरू किया. उसका गला फूल गया और लंड का लाल डंडा आधा धीरे धीरे रघू के मुंह में समा गया. मैं अचंभे से तकता रह गया. करीब करीब आठ नौ इंच लंड रघू ने निगल लिया था. वैसे यह कोई नयी बात नहीं थी क्योंकि मैं भी रघू का आठ इंची लौड़ा पूरा निगलना सीख गया था. पर उस घोड़े का इतना मोटा लंड निगलना कोई आसान बात नहीं थी.

रघू अब मन लगाकर घोड़े का लंड चूस रहा था. बार बार लंड मुंह से निकालता और फिर निगल लेता, बिलकुल जैसे ब्लू फिल्म में की रंडियां करती हैं. साथ ही मुंह के बाहर निकले लंड को वह लगातार हथेलियों में लेकर रगड़ रहा था.

मोती ने अचानक गर्दन हिलाकर अपनी नथनियों से एक फुंकार छोड़ी और उसका सारा बदन थरथराने लगा. उसका लंड भी अब फूल और सिकुड़ रहा था. मोती शायद झड़ गया था. रघू के गले की हालचाल से लग रहा था कि वह अब फ़टाफ़ट मोती का वीर्य निगल रहा था.

घोड़े कितनी देर झड़ते हैं यह मुझे आज पता चला. रघू बहुत देर मोती का वीर्य निगलता रहा. मेरी बड़ी इच्छा थी कि देखूं कि मोती का वीर्य कैसा है पर रघू ने अब घोड़े के सुपाड़े के साथ उसका आधा लंड फिर निगल लिया था और इस सफ़ाई से उसका वीर्य चूस रहा था कि एक बूंद भी बाहर नहीं पड़ रही थी.

आखिर अंत में रघू का मुंह भी थक गया होगा. मोती का लंड अब शांत हो गया था. रघू ने लंड मुंह से निकाला और जोर जोर से सांस लेते हुए सुस्ताने लगा. मोती का लंड अब तेजी से सिकुड़ रहा था. उसके लाल लाल सुपाड़े के छोर से अब एक हल्के पीले रंग के गाढ़े वीर्य का कतरा लटक रहा था. मोती का वीर्य कितना गाढ़ा होगा इसका अंदाजा मुझे इससे लग गया कि वो कतरा वैसा ही लटकता रहा, टूट कर गिरा नहीं. रघू की सांस अब तक शांत हो गयी थी, उसने बड़े प्यार से जीभ निकालकर उस कतरे को चाट लिया.

"कुर्बान हो गया तेरे माल पर मेरे राजा, पेट भर दिया तूने अपने अमृत से मेरा. अब जरा मुझे भी मजा कर लेने दे मेरे यार" कहकर रघू अपने लंड को पकड़कर खड़ा हो गया. उसका लंड अब सूज कर लाल लाल हो गया था. मेरी गांड उसने अभी अभी मारी थी. फिर भी उसका लंड जिस तरह से खड़ा था उससे साफ़ जाहिर था कि रघू कितना कामोत्तेजित था.

मैं भी मस्ती में था. जानवर के साथ संभोग कितना मादक हो सकता है इसका अहसास मुझे हो रहा था. बहुत मन कर रहा था कि भाग कर जाऊं और रघू का लौड़ा चूस लूं या

उससे गांड मरा लूं. पर डर के मारे चुप रहा कि रघू को पता चल गया कि मैं घोड़े के साथ उसके संभोग को देख रहा हूं तो न जाने क्या कहे.

रघू जाकर एक बड़े पथर पर खड़ा हो गया. "आ जा मेरी जान, मेरे पास आ जा." उसके कहते ही मोती जो अब शांत हो गया था, एक बार हिनहिनाया जैसे रघू की बात समझ गया हो और पीछे खिसककर अपनी रान रघू के सटा कर खड़ा हो गया. लगता था वह बिलकुल जानता था कि रघू क्या करने वाला है और उसकी सहायता कर रहा था. ऊंचाई पर खड़े होने के कारण रघू का लंड घोड़े की गांड के ही लेवल पर आ गया था.

"आ तेरी गांड मार लूं मेरे राजा, तेरे जितने बड़ा तो लंड नहीं है मेरा पर तुझे मजा आता है ये मुझे मालूम है." कहकर रघू ने मोती की पूंछ उठाई. घोड़े की गांड का भूरा छेद खुल और बंद हो रहा था जैसे बड़ी बेचैनी से रघू के लंड का इंतजार कर रहा हो. रघू ने अपना लंड घोड़े की गांड पर जमाया और पेलने लगा. मोती भी अपनी गर्दन इधर उधर हिलाता हुआ खुद ही पीछे खिसका जैसे अपने मालिक का लंड लेने की कोशिश कर रहा हो. नतीजा यह हुआ कि एक ही बार में आराम से रघू का मोटा तगड़ा लंड मोती की पूंछ के नीचे के छेद में पक्क से समा गया.

चट्टान पर खड़े खड़े रघू अब घोड़े की मजबूत रान पकड़कर उसकी गांड मारने लगा. मोती शांत खड़ा खड़ा मरवा रहा था, बीच में ही वह थोड़ा आगे पीछे होता जैसे रघू का लंड और अंदर लेने की कोशिश कर रहा हो. रघू वासना से हांफ़ रहा था, उससे यह सुख सहन नहीं हो रहा था. बीच में वह झुक कर मोती की पीठ चूम लेता और फिर घचाघच उसकी गांड मारने लगता. मोती भी मजा ले रहा था, रघू के एकाध जोरदार धक्के से जब ज्यादा मजा आता तो वह अपनी नथनी से फुंकार देता.

रघू अब मस्ती में पागल हो रहा था. जोर जोर से घोड़े के गांड मारता हुआ बोला. "हा ५ य रे, मजा आ गया यार, तेरी गांड मारूं ५ साले खूबसूरत जानवर. अरे तू भी मेरी मार रे किसी तरह, मैं मर जाऊं, मेरी गांड फ़ट जाये पर तेरा ये लंड डाल राजा मेरी गांड में, अरे एकाध खूबसूरत घोड़ी भी दिलवा मुझे राजा चोदने को, अरे मर गया रे ५"

कहकर रघू झड़ गया और हांफ़ता हुआ मोती को चिपककर खड़ा रहा. मोती गर्दन मोड़ मोड़ कर रघू की ओर देख रहा था और दबे स्वर में हिनहिना रहा था जैसे कह रहा हो कि मजा आ गया. आखिर अपनी झड़ा लंड घोड़े की गांड से निकालकर रघूने धोती से पोंछा और सुस्ताने को जमीन पर बैठ गया. मोती प्यार से उसकी गर्दन और कान चाट रहा था. लगता है दोनों की जोड़ी अच्छी जम गयी थी. मैं तो बुरी तरह उत्तेजित था, एक तो पहली बार मानव और जानवर का संभोग देखा था, और वह भी समलिंगी. क्या बात थी!

रघू बोला. "अब आ जा मुन्ना, क्यों छिपता है रे फ़ालतू में, आ जा अपने रघू दादा के पास." मुझे लकवा सा मार गया. याने रघू को मालूम था कि मैं देख रहा हूं! पहले थोड़ा डरा कि रघू पिटाई न करे पर उसकी आवाज में भरी मादकता से मेरी जान में आन आयी.

मैं झाड़ी के पीछे से निकला और रघू से लिपट गया. "रघू दादा, तुमको मालूम था मैं देख

रहा हूँ? तुमको गुस्सा तो नहीं आया?"

मेरे खड़े लंड को पैट के ऊपर से ही सहलाते हुए मुझे चूमता हुआ वह बोला. "अरे मैं तब से देख रहा हूँ जब से छुप छुप कर तू हमारा पीछा कर रहा था. पहले सोचा तुझे डांट कर भगा दूँ, नहीं तो तेरी मां गुस्सा करेगी. ये जानवरों से चुदाई देखने को तू अभी छोटा है. पर फिर सोचा तुझे मजा आयेगा तो दिखा ही दूँ तुझे भी यह जानवरों से रति वाली जन्नत. कैसी लगी मोती के साथ मेरी मस्ती?"

उसके मुँह से अजीब सी खुशबू आ रही थी. कुछ जानी पहचानी थी, आखिर वीर्य ही था, भले ही घोड़े का हो, हाँ ज्यादा महक वाला था. "बहुत मजा आया रघू दादा. और क्या गांड मारी तुमने मोती की! यह घोड़ा मरा लेता है चुपचाप, दुलती नहीं झाड़ता? और तुम्हें गंदा नहीं लगा घोड़े की गांड में लंड डालते समय?" मैंने मोती का चिकना शरीर सहलाते हुए कहा. मोती की आंखों में एक अजब तृप्ति थी, वह अपने थुथनी से बार बार मुझे और रघू को ढकेल रहा था.

"मराने में इसे बहुत मजा आता है. सिर्फ़ खुद किसीकी मार नहीं पाया बेचारा, अब तक किसी को चोद भी नहीं पाया. पेट भर कर वीर्य जरूर पिलाता है ये अपने यार को. मैं कम से कम दो बार इसका लंड चूस देता हूँ, इससे यह फ़िदा हो गया है मुझपर. मालूम है मुन्ना, लोटा भर वीर्य निकलता है इसके लंड से. और इसकी गांड एकदम साफ़ रहती है. लीद करने के बाद मैं पाइप डालकर इसकी गांड अंदर से धोता हूँ, एकदम मखमल की नली जैसी मुलायम है. तेल भी रोज लगाता हूँ इसकी गांड के अंदर, इसे अच्छा लगता है, और गांड भी मुलायम रहती है"

रघू की बात से मैं समझ गया कि लोटा भर नहीं फिर भी बड़ी कटोरी भरकर वीर्य जरूर निकलता है इसके लंड से.

"कैसा लगता है रघू दादा इसके रस का स्वाद?" मैंने साहस करके पूछा. जवाब मुझे मालूम था. "मस्त, एकदम मलाई जैसा गाढ़ा. थोड़ा चिपचिपा है घी जैसा, तार छूटते हैं. तू चखेगा मुन्ना?"

मैं क्या कहता? लंड कस कर खड़ा था. जानवरों मे साथ इन्सानों की रति इतनी उत्तेजक हो सकती है पहली बार मुझे इसका अहसास हो रहा था. दूसरे यह कि मोती बड़ा सुंदर और साफ़ सुथरा घोड़ा था. मैंने पूछा "रघू, इसकी गांड काफ़ी ढीली होगी, है ना? याने मेरी ओर मां और मंजू बाई की तुलना में तो बहुत बड़ी होगी. फिर तुम्हें मजा आता है ऐसी ढीली गांड मारने में?"

"क्या बातें पूछता है मुन्ना, बहुत होशियार है!" रघू ने मुस्कराकर कहा. "हां ढीली है पर यार घोड़े की गांड है, बहुत गहरी, मजा आता है कि घोड़े की मार रहा हूँ. याने समझा ना तू? मैंने घोड़ी नहीं खरीदी, नहीं तो घोड़ी खरीदकर भी चोद सकता था. उसका लंड नहीं होता ना! असल में लंड के लिये खरीदा है इसे, साथ ही एक छेद भी मिल जाता है चोदने को. और ढीली भले ही हो, पर बड़ा गरम है यार, तपती है."

मैं कुछ न बोला और फिर रघू से आगे पृच्छने लगा. "रघू दादा, मोती को भी ऐसे इंसानों से चुदाई करने का आदत है लगता है. इसे किसने सिखाया ऐसा करना? तुमने?"

"अरे नहीं, ये बचपन से सीखा सिखाया है. इसे और उन दो कुत्तों और कुतिया को मैं शहर के पास की एक बाई से खरीद कर लाया हूं. उस बाई का पेशा ही है, साली रंडी है, बहुत सी लड़कियां और लड़के पाल रखे हैं जो चाहे जैसी चुदाई करते हैं ग्राहकों के साथ. बहुत पैसे लेती है वह रंडी पर धंदा खूब चलता है उसका. पशुओं के साथ उन लड़के लड़कियों की चुदाई इस तरह के खेल भी दिखाती है उसके और ज्यादा पैसे लेती है साली. सिखाकर कुत्ते, कुतिया, घोड़े आदि बेचती भी है. रसिक लोग जो पशुओं से चुदाई के शौकीन हैं, खरीद कर ले जाते हैं. मांजी ने पैसे दिये थे मुझे इन्हें खरीद लाने को. मोती को बचपन से बस यही सिखाया गया है, बेचारे को मालूम भी नहीं होगा कि घोड़ी क्या होती है. यही हाल उन दो कुत्तों और कुतियों का है" रघू शैतानी से मेरी ओर देख कर मुस्करा रहा था.

मेरा सिर घूम गया. मां इतनी चुदल होगी मैं सोच भी नहीं सकता था. उसने रघू को इन्सानों के साथ रति के लिये सिखाये जानवर खरीद लाने को कहा था.

मेरे मन की बात भांप कर रघू बोला. "तेरी मां और मेरी मां, साली महा चुदल रंडियां हैं दोनों. नयी नयी चुदाई का रास्ता खोजती रहती हैं. अब हम दोनों बेटों के साथ तो उनकी मस्त चुदाई होती ही है. देखा कैसे मस्त रहती हैं अपने अपने बेटों से मरवाने से. अब कुछ और नया चाहिये उन्हें. और किसी को हम चारों में शामिल करने को तो वे तैयार नहीं हैं. मेरी मां साली महा चुदल है. उसी ने यह रास्ता सोचा. बहुत पहले जब मैं छोटा था और उसे कोई चोदने वाला नहीं था तब एक दो बार कुत्ते से चुदवा चुकी है. बहुत मजा आया था उसे. इसीलिये जब एक दिन मालकिन बोली कि मंजू कुछ नया सोच तो उसने मालकिन को भी राजी कर लिया जानवर खरीद लाने को."

मैंने पूछा. "तो अब क्या करती हैं दोनों उन कुत्तों के साथ?" मैं अपने लंड को पकड़कर मुठिया रहा था, मुझसे रहा नहीं जा रहा था.

रघू मेरा हाथ पकड़कर बोला. "देखेगा? चल मेरे साथ, तुझे रास लीला दिखाता हूं. वैसे दोनों मोती पर भी फ़िदा हैं पर डरती हैं उसके लंड से. बस एक दो बार मेरे साथ चूसने की कोशिश कर लेती हैं. हो जायेंगी तैयार जल्दी ही. और फिर मोती को चोदने को चूत मिल ही जायेगी, घोड़ी की न सही पर इंसानी घोड़ी की, और ज्यादा मस्त और टाइट. पर उन कुत्तों के साथ तो उनकी मस्त जमती है. तेरी मां तो खास मेहरबान है उनपर. तू चल और देख ले"

मैं अब लंड पैट से निकाल कर मुठ मार रहा था. रघू ने मुझे रोकने की कोशिश की पर जब मैं नहीं रुका तो बोला "मुन्ना, तू गरमा गया है, मैं जानता हूं, ये जानवरों से चुदाई की बात ही ऐसी है, मैं तुझे नहीं रोकूंगा झड़ने से पर ऐसे फ़ालतू न बहा अपना वीर्य, चल मेरी ही गांड मार ले. चल एक नये तरीके से मरवाता हूं तुझसे."

उसने मुझे मोती पर बिठा दिया. फिर मोती के लंड से निकले वीर्य की एक दो बूंदें उंगली पर लेकर अपने गुदा में चुपड़ लीं और मेरा लंड चूस कर गीला किया. फिर वह उचक कर मेरे सामने मोती की पीठ पर चढ़ गया. अपनी धोती पीछे से उठा कर बोला "घुसेड़ दे मुन्ना मेरी गांड में तेरा लौड़ा"

मैं तो फ़नफ़ना रहा था. रघू की गांड में लंड डाल दिया. पकाक से वह पूरा घुस गया. तब मुझे समझ में आया कि घोड़े का वीर्य कितना चिकना और चिपचिपा था. मैं बैठा बैठा ही रघू की गांड मारने की कोशिश करने लगा.

रघू बोला. "ऐसे नहीं मुन्ना, बस बैठा रह और मुझे पकड़ ले. अब मोती भागेगा तो अपने आप तेरा लंड मेरी गांड में अंदर बाहर होगा."

उसने मोती को ऐड़ी लगायी और मोती घर की ओर चल पड़ा. उसकी चाल से मैं ऊपर नीचे आगे पीछे हिलने लगा और मेरा लंड रघू की गांड में फ़िसलने लगा. बहुत सुखद अनुभव था. "रघू दादा मजा आ गया" मैं बोला.

"अब मोती को सरपट भगाता हूं, फिर देखना राजा" कहकर रघू ने मोती को इशारा किया और वह घोड़ा दौड़ने लगा. मैंने आंखें बंद कर लीं और रघू की कमर में हाथ डालकर पीछे से चिपट गया. घोड़ा ऊपर नीचे होता था तो रघू की गांड अपने आप इतनी मस्त मारी जा रही थी कि मैं दो मिनट से ज्यादा न रुक सका और चिल्लाकर झड़ गया. ऐसा लगता था जैसे जान निकल गयी हो. थककर तृप्त होकर मैं निढाल हो गया और रघू से चिपट कर सुस्ताने लगा.

रघू ने घोड़े की रफ़्तार कम की. "रघू मैं झड़ गया, अब मां और मंजूबाई के यहां जाकर क्या करूंगा." मैं भुनभुनाया. मुझे मजा आया था पर बुरा भी लग रहा था कि क्यों झड़ गया. मस्ती में रहता तो कुत्तों के साथ की रासलीला देखने में और मजा आता, ऐसा मैं सोच रहा था.

"फ़िकर मत कर मुन्ना, वहां का जन्नत का नजारा देखकर तेरा ऐसा खड़ा हो जायेगा जैसे झड़ा ही न हो." रघू ने समझाया.

"रघू दादा, ऐसी घोड़े पर बिठा कर गांड मेरी भी मारो ना. तुम्हारा मस्त मूसल मेरी गांड में अंदर बाहर होगा जब मोती भागेगा." मैंने रघू से मचल कर कहा.

"जरूर मुन्ना, कल ही तुझे मोती पर बिठाकर जंगल में घुमाने ले चलूंगा गोद में लेकर." रघू के आश्वासन से मुझे कुछ तसल्ली हुई.

--- भाग ११ - समाप्त ---